

मानव मनोविज्ञान एवं पर्यावरण

दीपिका राठौड़

सहायक आचार्य (चित्रकला)

राजकीय कला महाविद्यालय कोटा

सारांश – मनोविज्ञान की एक शाखा के रूप में रखकर इसे पर्यावरणीय मनोविज्ञान नाम देना उचित रहेगा।

पर्यावरणीय मनोविज्ञान का तात्पर्य है "मानव पर उसके आसपास के प्राकृतिक पर्यावरण का प्रभाव तथा उन दोनों के अंतर संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन ही पर्यावरणीय मनोविज्ञान कहलाता है" मानव के दैनिक जीवन के क्रियाकलापों पर पर्यावरण का मनोवैज्ञानिक प्रभाव बहुत गहरा पड़ता है। पर्यावरण, मानव व्यवहार तथा मानव के विचारों को कैसे प्रभावित करते हैं?

मैं इस शोध पत्र के द्वारा यह प्रस्तुत करना चाहूंगी कि सृजनशील व्यक्ति जैसे चित्रकार, लेखक, कवि, संगीतकार इत्यादि पर पर्यावरण का मनोवैज्ञानिक प्रभाव अत्यंत गहरा होता है। मानव सभ्यता एवं संस्कृति में सृजनशीलता को सर्वोपरि माना गया है। एक कलाकार अपने मन के विचारों से समाज में भावनात्मक और वैचारिक सामंजस्य उत्पन्न करता है एवं वह कलाकार प्रकृति से सदैव प्रेरणा लेकर, अपनी कलाकृतियों की विषय वस्तु में प्राकृतिक पर्यावरण को महत्वपूर्ण स्थान देकर एक अनूठी कृति सृजित करता है।

प्राकृतिक पर्यावरण से उत्पन्न हुए कलाकार के मनोभाव कृतियों के माध्यम से समाज के सामने प्रदर्शित होते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण अनुकूल होगा तो एक कलाकार, चित्रकार, लेखक के मन मस्तिष्क पर सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा, शांत भाव से कलाकार समाज के लिए उत्कृष्ट कलाकृतियों का सृजन कर पाएगा।

वही यदि प्राकृतिक पर्यावरण प्रतिकूल होगा तो कलाकार का मन अशांत, बेचैन हो जाएगा तथा वह ऐसी कलाकृतियों का सृजन कर सकता है जो समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालें।

प्रस्तावना – मेरे इस शोध पत्र का लक्ष्य यह विश्लेषण करना है कि, मानव मनोविज्ञान तथा पर्यावरण कैसे एक दूसरे से संबंधित है। मैं इस विषय पर प्रकाश डालूंगी कि, किस प्रकार एक सृजनशील व्यक्ति के मनोविज्ञान को पर्यावरण प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से प्रभावित करता है? इस शोध पत्र द्वारा हम यह देखेंगे कि, एक सृजनशील व्यक्ति जैसे चित्रकार, लेखक, कवि, संगीतकार तथा पर्यावरण एक दूसरे से कैसे संबंधित है? उनका पारस्परिक संबंध क्या है?

इस शोध पत्र के माध्यम से हम निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास करेंगे।

- 1) एक सृजनशील व्यक्ति के मनोविज्ञान पर प्राकृतिक पर्यावरण का सकारात्मक प्रभाव कैसे पड़ता है?
- 2) एक सृजनशील व्यक्ति के मनोविज्ञान पर प्राकृतिक पर्यावरण का नकारात्मक प्रभाव कैसे पड़ता है ?
- 3) समाज में कलाकार की क्या स्थिति है? तथा समाज व कृत्रिम पर्यावरण कलाकार को कैसे प्रभावित करता है?



शोध की रूपरेखा इस प्रकार है

- शब्दावली
- कलाकार का समाज में स्थान
- कलाकार तथा पर्यावरण का आपस में अंतर संबंध
- कला चिकित्सा
- समस्याएं एवं चुनौतियां
- कलाकार के दायित्व
- संदर्भ सूची

शब्दावली—

मानव मनोविज्ञान — मानव मनोविज्ञान से तात्पर्य मनुष्य के मन मस्तिष्क में चलने वाले विचार, संवेदनाएं, भावनाएं, अनुभव इत्यादि है, जो व्यक्ति को जीवन जीने की शैली सीखाते हैं तथा प्रभावित करते हैं।

पर्यावरण — पर्यावरण का तात्पर्य मनुष्य के भौतिक बाहरी वातावरण से है जहां वह रहता है, जिसमें प्राकृतिक पर्यावरण के अंतर्गत प्रकृति, पेड़ पौधे, पहाड़, नदी, तालाब, समुद्र, बादल, सूरज, चांद, मंद हवा, तेज अंधड़, घुमड़ते बादल, बिजली, पशु-पक्षी, उनकी चहचहाट इत्यादि है।

वही कृत्रिम पर्यावरण से तात्पर्य मनुष्य द्वारा निर्मित भौतिक वातावरण है, जिसमें शहर, गांव, आवासीय क्षेत्र, कार्य स्थल, शहर की ऊंची ऊंची बिल्डिंग, गांव के घर, वहां के मोहल्ले, शहर की भीड़ भाड़, गाड़ियों का शोर शराबा, गाड़ियों का हॉर्न, शहर का बगीचा, नदी, तालाब पर बने पुल, उद्योग प्रदूषण इत्यादि आते हैं।

पर्यावरणीय मनोविज्ञान — जिस स्थान पर मनुष्य रहता है या सृजन करता है उस वातावरण या पर्यावरण का मनुष्य के मनोविज्ञान पर गहरा प्रभाव पड़ता है इसे मनोविज्ञान की शाखा के रूप में पर्यावरणीय मनोविज्ञान कहा जा सकता है। जिसमें मानव मनोविज्ञान तथा पर्यावरण के संबंध का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन किया जाता है।

समाज में कलाकार की स्थिति — मानव सभ्यता एवं संस्कृति में सृजनशीलता को सर्वोपरि माना गया है। एक कलाकार अपने मन के विचारों से समाज में भावनात्मक एवं वैचारिक सामंजस्य उत्पन्न करता है। शुरुआत में समाज में कलाकार को मात्र साधक माना जाता था परंतु आज कलाकार अपने दायित्व को समझ कर प्रकृति पर्यावरण को बचाने के लिए लगातार कार्यरत है। वह अपने मनोभावों से पर्यावरण तथा मानव के बीच संतुलन स्थापित करने का कार्य कर रहा है, इसीलिए समाज में कलाकार की स्थिति ओर अधिक ऊंचा स्थान रखती है।

सृजनशील व्यक्ति तथा पर्यावरण का आपस में अंतर संबंध — चित्रकार, लेखक, कवि, संगीतकार अपनी रचनाओं कृतियों में तत्कालीन वातावरण पर्यावरण को दर्शाते हैं। उनके सृजन पर पर्यावरण का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई देता है। वही कलाकार के सृजन द्वारा प्रदर्शित मनोभाव भी सामाजिक चेतना को प्रभावित करते हैं। कलाकार के मन पर या मानसिक दशा पर वातावरण तथा पर्यावरणीय परिस्थितियों का विशेष प्रभाव पड़ता है।



कला, साहित्य व संगीत मानव जीवन की संवेदना का प्रतिबिंब है। सृजनशील व्यक्ति समाज की धड़कनों को अनुभव करता है, उन्हें रंगों, शब्दों या ध्वनियों के रूप में प्रकट करता है। सृजनात्मकता के लिए कलाकार कि मानसिक स्थिति विशेष महत्व रखती है, वह अपनी भीतरी कलाकार को अपने रंग, शब्द तथा ध्वनि के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

प्राकृतिक वातावरण से प्रेरणा लेकर कई चित्रकारों ने अपने चित्र अपनी कलाकृतियां बनाई तथा लेखक, कवियों ने अपनी रचनाएं रची। प्रकृति सदैव उनकी प्रेरणा का स्रोत रही है।

उदाहरण – चित्रकार रामकुमार, राम जयसवाल, निकोलस रॉरिक इत्यादि ने अपने चित्रों में प्रकृति से प्रेरणा लेकर लैंडस्केप बनाए।

कालिदास से लेकर रविंद्रनाथ टैगोर ने अपनी कलाकृतियों एवं गीतों में प्रकृति को प्रेरणा स्रोत मानकर आत्मिक संवाद को प्रस्तुत किया।

सृजनशील व्यक्ति के मनोविज्ञान पर पर्यावरण का सकारात्मक प्रभाव – कलाकार जब सृजनशील होता है, तब उसका मस्तिष्क क्रियाशील होता है, तथा वह अपनी भावनाओं, संवेदना को कल्पना शीलता के साथ प्रकट करता है। सुंदर प्राकृतिक वातावरण, सुहाना मौसम, शांत वातावरण, कलाकार के मनोभावों को सकारात्मकता की ओर ले जाता है। शांति व सुखद अनुभूति कराता है, जिससे एक सर्जनशील व्यक्ति अपनी कृतियों में सुंदरता, रंगों में शीतलता, रेखाओं में गतिशीलता के द्वारा ऐसी कृतियां सृजित करता है जो समाज पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ें।

उदाहरण – विंसेंट वांग गॉग की सनफ्लावर या स्टारी नाइट में प्राकृतिक पर्यावरण का कलाकार के मन मस्तिष्क पर पड़ने वाला सकारात्मक प्रभाव है।

शांत और हरित वातावरण मन मस्तिष्क को संतुलित करता है तभी एक चित्रकार, कवि, लेखक या संगीत।

ग्रामीण, तटीय, पर्वतीय परिवेश में रहना पसंद करते हैं तथा उन स्थानों की विशेषताओं को अपनी रचनाओं को विषय के रूप में चुनकर सुंदर सृजन करते हैं।

वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि हरियाली, खुला आसमान, नदियों का प्रवाह, झरनों का गिरना, चिड़िया की चहचहाहट आदि से डोपामिन और सेरोटोनिन हार्मोन सक्रिय होते हैं, जिस से व्यक्ति प्रसन्न रहता है तथा रचनात्मक सोच प्रबल होती है तथा रचनात्मक व्यक्ति का मस्तिष्क उस समय अधिक संवेदनशील होता है। कलाकार तब साधारण चीजों में से भी विशेष अर्थ खोज लेते हैं तथा विविध विचारों को जोड़कर एक अनूठी रचना को जन्म देते हैं, इस रचना में गुणवत्ता अधिक होती है।

कला चिकित्सा – कई बार मानसिक रूप से ग्रसित व्यक्ति यदि कोई सृजन करता है, जैसे चित्र बनाता है, या कविता लिखता है, या संगीत रचना करता है तो उसका भीतरी तनाव बाहर निकलेगा उसका मनोबल, आत्मविश्वास बढ़ेगा। इसे कला के द्वारा उपचार या कला चिकित्सा कहा जाता है।

पर्यावरण या सामाजिक वातावरण का कलाकार के मनोविज्ञान पर नकारात्मक प्रभाव – यदि एक सृजनशील व्यक्ति शहरी भीड़भाड़, औद्योगिक प्रदूषण, धुआं, गाड़ियों का शोरगुल, कृत्रिम लाइटों की चकाचौंध जैसे पर्यावरणीय वातावरण में रहता है तो उसके मन मस्तिष्क पर नकारात्मक प्रभाव दिखलाई देगा। कलाकार को मानसिक शांति नहीं मिलेगी।

ऐसी स्थिति में सृजनशील व्यक्ति अक्सर तनाव, अवसाद, बेचेनी, अशांति की ओर चले जाते हैं, जिससे उनकी सृजनात्मक क्षमता घट जाती है या फिर जो वह सृजन करते हैं उसका समाज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।



उदाहरण – आधुनिक चित्रकार फ्रांसिस न्यूटन सूजा ने शहरी चकाचौंध, औद्योगिक जीवन के बीच अपनी कलाकृतियों का निर्माण किया। इस पर्यावरण से उनकी कलाकृतियां पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा उन्होंने अपनी कृतियों को विकृत किया तथा समाज के लिए अशोभनीय कलाकृतियां निर्मित की।

इसी तरीके से आधुनिक कलाकारों ने डार्क थीम्स पर आधारित कृतियों की रचना की। चित्रकार गणेश पाइन कि कृतियों में डरावनी, भूतिया आकृतियों को देखा जा सकता है।

आज की चुनौतियां व सुझाव

प्राकृतिक वातावरण से दूरी और आत्म संघर्ष – एक सृजनशील व्यक्ति यदि प्रकृति से दूर होता है तो वह कृत्रिमता के अधिक निकट आ जाता है वह डिजिटल स्क्रीन पर ज्यादा समय बिताता है। वह प्रकृति से भावात्मक या भौतिक रूप से नहीं जुड़ता और उसकी रचनाओं में कृत्रिमता, अभियांत्रिकी आने लगती है। कृतियों में संतुलन तथा संवेदनशीलता का अभाव दिखाई देता है।

एक सृजनशील व्यक्ति को सुखद एवं शांत पर्यावरण को चुनकर ही कलाकृतियों का सृजन करना चाहिए जिससे कलाकार मनोवैज्ञानिक रूप से सकारात्मक, सृजनशील, दृढ़ संकल्पित, सशक्त होकर श्रेष्ठ कलाकृतियों की रचना कर सके जो समाज के लिए कल्याणकारी रहे।

पर्यावरण को बचाने में कलाकारों की भूमिका – आज के समय में जब मानवता अनेक संकटों से गुजर रही है। तब कलाकार की भूमिका ओर भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इस समय कलाकार को अपनी कृतियों के माध्यम से पर्यावरण को बचाने, संभालकर रखने, संरक्षित करने जैसे संवेदनशील विषयों पर चित्र बनाकर, लेख लिखकर, कविताएं गढ़कर, गीत गाकर, संदेश देने चाहिए, जिससे वह सृजन मानव के मनोविज्ञान पर संवदात्मक रूप से गहरी छाप छोड़े तथा सामान्य समाज के लोग पर्यावरण को बचाने में अपना सहयोग दे।

कलाकार लैंड आर्ट, ग्रीन आर्ट, इंस्टॉलेशन आदि के माध्यम से संदेशों में समाज की मनोदशा को मजबूती दे सकता है।

संदर्भ सूची

1. तिवारी प्रेम सागर नाथ, पर्यावरणीय मनोविज्ञान ।
2. दास मोतीलाल बनारसी, आधुनिक पर्यावरणीय मनोविज्ञान ।
3. पर्यावरण– व्यवहार संबंध की प्रकृति और कार्य यूजीसी ईग्यनकोश संसाधन।
4. कुमार मधुप, पर्यावरण का मनोविज्ञान ।
5. पर्यावरण मनोविज्ञान की बड़ी चुनौतियां सार्कविस्ट पेट्रिक ।

